ग्लैडियोलस की वैज्ञानिक खेती

डॉ. सुनील चन्द्रा

विभागाध्यक्ष

के. पी. उच्च शिक्षा संस्थान, झलवा, प्रयागराज

पत्राचारकर्ता : samarpan031@gmail.com

प्रस्तावना

ग्लैडियोलस (कॉर्न सीसी या स्वोर्ड लीली) सबसे प्रमुख व्यावसायिक फूलों में से एक है जिसकी सुन्दरता उसका शानदार स्पाईक (पुष्प डंठल) है जो लुभावने रंग, आकर्षक पुष्प विन्यास एवं लम्बी पुष्प जीवंतता के साथ होती है। व्यावसायिक माँग के कारण इस फूल को बड़े पैमाने पर उगाया जाता है, परन्तु उद्यान को सुन्दर बनाने के लिए क्यारियों एवं गमलों में भी इसे लगाया जाता है। कटे फूल को गुलदस्ता, मेज सज्जा एवं भीतरी सज्जा के लिए मुख्य रूप से उपयोग किया जाता है।

ग्लैडियोलस की मुख्य रूप से दो तरह की किस्में होती है, एक बड़े फूलों वाली (Large flowered) तथा दूसरी छोटे फूलों वाली बटर फ्लाई (Butter fly or Miniature) बहुत से किस्मों में फूल के बीच का भाग जिसे ब्लाच (Blotch) कहते हैं दूसरे रंग का होता है जिससे इसकी सुन्दरता बढ़ जाती है।

व्यावसायिक रूप से उत्पादन हेतु-फ्रेंडशिप व्हाइट, फ्रेंडशिप पिंक, वाटरमेलन पिंक, लिली आसकर, जैकसन, विस-विस, यूरोवीजन आदि किस्में हैं।

भारत में विकसित प्रमुख किस्में-आरती, अप्सरा, अग्नि रेखा, सपना, शोभा, सुचित्रा, मोहनी, मनोहर, मयूर, मुक्ता, मनीषा, मनहार है।

प्रवर्धन-ग्लैडियोलस का प्रवर्धन कन्द (Corm) से होता है। कन्द लगभग 3-5 सेमीं0 व्यास का होना चाहिए। लट्टनुमा आकार वाले कन्द चिपटे कन्द की अपेक्षा उत्तम पाया गया है एक कन्द से कई छोटे-छोटे कन्द तैयार होते हैं परन्तु ये इतने छोटे होते हैं जो कि रोपने योग्य नहीं रहते है। अतः इन्हें 2-3 बार रोपाई करनी पड़ती है उसके बाद ही सही आकार के कन्द प्राप्त हो पाते हैं।

कन्द रोपन का उपयुक्त समय सितम्बर एवं अक्टूबर माह होता है। खुदाई के बाद कन्द लगभग तीन माह तक सुषुप्तावस्था में रहते हैं। अतः सुषुप्तावस्था में इनकी रोपाई न करें अन्यथा इनका अंकुरण नहीं होगा। रोपाई करने के पहले भूरे रंग के बाहरी छिलके को हटाकर 0.2 प्रतिशत कैप्टान या 0.1 प्रतिशत बेनलेट के घोल में 30 मिनट तक उपचारित करने के बाद ही कन्दों की रोपाई करनी चाहिए। इसकी इच्छी उपज प्राप्त करने के लिये कन्दों को अंकुरित करके रोपाई करनी चाहिये तथा कन्द को अंधेरे एंव गर्म स्थान पर बालू भरे ट्रे में लगाकर रखना चाहिए। बालू को नम बनाये रखनी चाहिये तथा ट्रे को पालीथीन से ढंक देना चाहिये। व्यावसायिक खेती हेतु कन्दों को 20-30 x 5-20 या 25 x 15 सेमीं0 की दूरी पर 5-10 सेमी0 गहराई पर रोपाई करें। प्रदर्शनी हेतु स्पाइक तैयार करने के लिए बड़े आकार के कन्द (5.0-7.5 सेमी0 व्यास के) को 30 x 20 सेमीं0 पर रोपना चाहिए। यदि कन्द की रोपाई 30-20 दिन के अन्तराल पर कई बार में की जाय तो स्पाइक लगातार अधिक समय तक मिलती रहती है।

खाद एवं उर्वरक: ग्लैडियोलस की अच्छी उपज प्राप्त करने हेतु प्रति वर्ग मीटर भूमि में 2.0-2.5 किग्रा0 कम्पोस्ट, 15-30 ग्राम नाइट्रोजन, 30-20 ग्राम फॉस्फोरस व 30-20ग्राम पोटाश देना चाहिए। कम्पोस्ट, फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा तथा नाइट्रोजन की चौथाई मात्रा रोपाई के समय देनी चाहिए। जबकि शेष नाइट्रोजन की मात्रा को तीन बार में बराबर-बराबर मात्रा में प्रथम पौधे में 3-4 पत्तियाँ आने पर, दूसरी बार स्पाइक निकलते समय तथा अन्तिम बार जब फूल निकलना समाप्त हो जाय तब देना चाहिये। अन्तिम बार नाइट्रोजन की मात्रा कन्दों की सही वृद्धि के लिए देते है।

अन्य क्रियाएँ-इसकी प्रथम तीन चार पत्ती की अवस्था पर एवं द्वितीय स्पाइक निकलने की अवस्था पर इसकी जड़ पर मिट्टी चढ़ानी चाहिये एवं आवश्यकतानुसार इसकी सिंचाई करनी चाहिए।

पौधे को सहारा देना-जब स्पाइक (फूल की डंढल) निकलने लगे उसी समय बांस की फट्टी को इस प्रकार लगाना चाहिये कि पौधे से स्पाइक न टेढ़ी-मेढ़ी हो सके न ही जमीन की तरफ झुक या गिर सके।

स्पाइक की कटाई-सबसे नीचे वाले फूल का रंग दिखाई देते ही तेज चाकू या सिकैटियर की मदद से सफाइक काटने के तुरन्त वाद पानीयुक्त बाल्टी में स्पाइक को रखें।

फूलदान के स्पाइक सजाना-फूल दान को साफ करने के बाद उसमें स्वच्छ पानी भरकर स्पाइक को सजायें। दूसरे दिन से रोजाना या एक दिन के अन्तराल पर स्पाइक को नीचे से 1.5 सेमी0. काटते रहें तथा पानी बदलकर साफ पानी भर दें अनुकूल दशा मे स्पाइक के सभी फूल धीरे-धीरे खिल जाते है तथा कम से कम एक हफ्ते तक आसानी से फूलदान में रखा जा सकता है।

कन्द की खुदाई एवं भंडारण-यदि पौधे से स्पाइक को नहीं काटा जाता है और उसे क्यारी या गमले में ही सुन्दरता प्रदान करने के लिए पूर्णतः खिलने देते हैं तो यह ध्यान रखें कि पौधे पर बीज न बनने पाये अन्यथा कन्द को नुकसान पहुँचता है। जब पत्ती पीले या भूरे रंग की हो जाय एवं सूखना शुरू करे तो कन्द एवं कारमेल को खुरपी की सहायता से खुदाई करें। कन्द को खोदने के बाद 0.2 प्रतिशत बाविस्टीन/ कैप्टान या 0.1 प्रतिशत बेनलेट घोल से 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान पर 2-3 सप्ताह तक सुखाकर लकड़ी की पेटी या जूट के बैग में रखकर हवादार एवं ठंड कमरे में भंडारित करें। यदि कोल्ड स्टोरेज में 40^0 सेंटीग्रेड पर भंडारित किया जाय तो यह सर्वोत्तम होगा।

कीड़े एवं बीमारियाँ-ग्लैडियोलस को थ्रिप्स कीड़ा से ज्यादा नुकसान होता है इसके लिए 0.3 प्रतिशत सेविन या 0.1 प्रतिशत मैथाथियान या 0.15 प्रतिशत नुवान के घोल का छिड़काव 15-20 दिन के अन्तराल पर करें। भंडारण के समय भी कभी-कभी ये कीड़े कन्द को क्षति पहुँचाते हैं। अतः भंडारण के समय भी आवश्यकतानुसार 2-3 छिड़काव करना लाभदायक होता है।

ग्लैडियोलस में मुख्य रूप से भूमि जनित दो बीमारियाँ स्ट्रोमेटीनिया ऑक्सीस्पोरम और फ्यूजेरियम ग्लैडियोली का साधारणतया प्रभाव पाया जाता है। इसके प्रभाव से कन्द सड़ जाते हैं। इस बीमारी से बचाव के लिए बीमारी रहित कन्द का चुनाव करें तथा कन्द को रोपने के पहले 0.2 प्रतिशत कैप्टान से या गर्म पानी में 48^0 से0 30 मिनट तक उपचारित करना चाहिए।

खड़ी फसल मे बीमारी से बचाव हेतु 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 का छिड़काव करें।

उपज-उचित फसल प्रबंधन से एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 2-2.5 लाख पुष्प डंठल प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त लेख से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्लैडियोलस वर्तमान समय में बहुत लोकप्रिय फूल है। जिसकी माँग भी आज बाज़ार में बड़ी जोर से बढ़ रही है। यदि किसान इसका उत्पादन बड़े पैमाने पर करते हैं और इसकी थोड़ी देखरेख करते हैं तो किसान अच्छी मात्रा में फूल प्राप्त कर सकते हैं, और अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकते हैं।

❖❖